दिनांक 8 दिसम्बर, 2017 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आड्रे हाउस में भारतरत्न डा० एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी के जन्म–शताब्दी समारोह में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

मुझे आज इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा भारतरत्न डा० एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी के जन्म–शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित इस संगीत कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।

भारत रत्न से सम्मानित होने वाली पहली संगीतज्ञ डा० एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी की कला की अनेक मशहूर संगीतकारों ने तारीफ की है। साथ ही भारत के कई महान हस्तियों, जैसे महात्मा गांधी और पंडित नेहरु भी उनके संगीत के प्रशंसक थे।

डा० एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी पहली भारतीय हैं जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा पहली स्त्री हैं, जिनको कर्णाटक संगीत का सर्वोत्तम पुरस्कार, संगीत कलानिधि प्राप्त हुआ। भारत रत्न एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी को पद्म भूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, संगीत कलानिधि, मैग्सेसे एवॉर्ड, पद्म–विभूषण, कालीदास सम्मान, इंदिरा गांधी एवॉर्ड जैसे कई सम्मान से भी नवाज़ा गया। वे बहुमुखी प्रतिभा के अत्यन्त धनी थी।

डा० एम०एस० सुब्बुलक्ष्मी आज इस दुनिया में नहीं रही, लेकिन उनकी कृति, उनके गाने सदैव रहेगी। वे संगीतप्रेमियों के लिए आदर्श हैं तथा संगीत के क्षेत्र में कैरियर बनाने वालों के लिए प्रेरणास्रोत कहे जा सकते हैं। जहाँ तक हमारे देश की कला–संस्कृति

की बात है, इसका गौरवमयी इतिहास रहा है। हमारे देश में विविध संस्कृतियाँ हैं। हमारी कला एवं संस्कृति हमारी पहचान है, हमारी आत्मा है। इस समृद्ध विरासत को बचा कर रखना है, ताकि सारे विश्व में भारतीय संस्कृति का परचम सदा यूँ ही लहराता रहे। इस प्रकार के आयोजन से लोगों में कला के प्रति और प्रेम-भाव बढ़ता है।

हम प्राय: सुनते हैं कि हमारे कलाकारों को अन्य राष्ट्रों के द्वारा भी कला का प्रदर्शन करने हेतु बड़े ही सम्मान से आमंत्रित किया जाता है। संगीत, गायन एवं नृत्य विधाओं की दृष्टि से भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध रही है। संगीत एवं लोक नृत्य हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की पहचान है। यह हमारे देश की साझी संस्कृति का अनुपम उदाहरण है।

जहाँ तक हमारे राज्य की बात है, हमारे राज्य के लोगों के कण-कण में कला एवं खेल प्रेम देखा जा सकता है। झारखण्ड राज्य में संगीत एवं नृत्य की गौरवशाली एवं समृद्ध परंपरा सदा से है। नृत्य एवं संगीत इस राज्य की पहचान है, इसकी आत्मा में बसी है। इस राज्य के घर-घर में प्रत्येक व्यक्ति में यह रचा बसा है। मैं शिक्षण संस्थानों का निरंतर भ्रमण किया करती हूँ। मैंने गौर से देखा है कि हमारे छोटे-छोटे बच्चों में भी कला, संस्कृति, खेल के क्षेत्र में असीम प्रतिभा निहित है। वे पढ़ाई के साथ-साथ इस क्षेत्र में भी अच्छा कर रहे हैं। अपने प्रदर्शन से सबका मन मोह लेते हैं।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!